॥ श्री ॥

प्रद्युम्नचरित

PRADYUMNACHARITA

आ. महासेन · १०वीं शती · अभिलेख ४२/९०

श्री चन्द्रनन्दि → आ. महासेन

संक्षिप्त परिचय

आचार्य महासेन कृत — श्रीकृष्ण-पुत्र प्रद्युम्न के पूर्वभव और विद्याधर-हरण की रोमांचक कथा का जैन काव्य।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

प्रद्युम्नचरित — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ४२ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. महासेन; रचना-काल १०वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक १४७) के अनुसार इनका समय ई.श. ८–९ है तथा गुरु श्री चन्द्रनन्दि। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "सुलोचना कथा" उल्लिखित है। समकालीन ग्रन्थों में चन्द्रप्रभचरित, गद्यचिन्तामणि, क्षत्रचूड़ामणि, यशस्तिलकचम्पू, नीतिवाक्यामृत, गोम्मटसार जीवकाण्ड परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

चन्द्रप्रभचरित · गद्यचिन्तामणि · क्षत्रचूड़ामणि · यशस्तिलकचम्पू · नीतिवाक्यामृत · गोम्मटसार जीवकाण्ड

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ४२ — मूल छायाचित्र